"इकाई - 2"

"b"

अर्थशास्त्र की शिक्षण विधियां →

अर्थशास्त्र-शिक्षण की विधियां साज-सज्जा, उपागम, विषय-वस्तु के संगठन, शिक्षक एवं शिष्य के अभिप्रायों, शिक्षक-शिष्य सम्बन्ध, छात्र-छात्र सम्बन्ध तथा छात्र-सहभागिता पर आधारित होनी चाहिए। इनको आधार बनाकर अर्थशास्त्र के शिक्षण में निम्नलिखित शिक्षण-विधियों का प्रयोग किया जाता है—

1. पाठ्य-पुस्तक विधि (Text-book method)
2. व्याख्यान विधि (Lecture method)
3. प्रयोगशाला विधि (Laboratory method)
4. योजना विधि (Project method)
5. समस्या-समाधान पद्धति (Problem sovling method)
6. विचार-विमर्श पद्धति (Discussion method)
7. आगमन-निगमन पद्धति (Inductive and Deductive method)
8. विश्लेषणात्मक व संश्लेषणात्मक पद्धति (Analytic and Synthetic method)
9. समाजीकृत अभिव्यक्ति पद्धति (Socialized recitation method)
10. निरीक्षित-अध्ययन पद्धति (Supervised study method)
11. इकाई पद्धति (Unit method)
12. अन्वेषण पद्धति (Heuristic method)
13. कार्य-निर्धारण पद्धति (Assignment method)
14. सर्वेक्षण पद्धति (Survey method)
15. स्रोत विधि (Source method)
16. तुलनात्मक पद्धति (Comparative method)

प्राचार्य
... मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर ताखा बलिया

उपर्युक्त पद्धतियों या विधियों को निम्नलिखित श्रेणियो मे भी विभक्त किया जा सकता है -

व्याख्यान पद्धति → शिक्षण मे इस पद्धति का प्रयोग प्राचीनकाल से होता चला आ रहा है। आजकल भी भारतीय शिक्षालयों मे इस पद्धति ने महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर रखा है। व्याख्यान का तात्पर्य पाठ को भाषण के रूप मे पढ़ाने से है इसमे शिक्षक अपने मुख से कह कर पढ़ाता है। बाइनिंग व बाइनिंग इसको कथन विधि (Telling method) के नाम से पुकारते है। व्याख्यान विधि अर्थशास्त्र के शिक्षण मे अपना अद्वितीय स्थान रखती है। इस विधि द्वारा शिक्षक गहन एवं सूक्ष्म विषय-वस्तु को सरल तथा सुबोध बना सकता है। शिक्षक इसके प्रयोग मे व्याख्यान के साथ-साथ स्वयं प्रश्नो द्वारा पाठ का विकास करता चलता है तथा छात्रों को भी प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित कर के विषय-वस्तु की विवेचना करता है। इस प्रकार इसमे बच्चे की कई इन्द्रिया सक्रिय रह सकती है दूसरे व्याख्यान वक्ता के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के साथ बालको के मस्तिष्क मे स्थान ग्रहण करता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल म०विद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

प्रयोग →

① इसका प्रयोग किसी बडी इकाई या बड़े लम्बे प्रकरण या पृष्ठभूमि

देने के लिए करना चाहिए।

(2) व्याख्यान पद्धति का प्रयोग बालकों के समय की बचत के लिए भी किया जाना चाहिए।

(3) किसी नवीन पाठ की प्रस्तावना से परिचित करने के लिए भी व्याख्यान पद्धति का प्रयोग हो सकता है।

(4) इस पद्धति का प्रयोग किसी विषय या प्रकरण का सारांश देने के लिए भी किया जा सकता है।

गुण —

(1) व्याख्यान पद्धति द्वारा छात्रों मे किसी भावना को ध्यान पूर्वक सुनने की आदत का निर्माण हो जाता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल प्रा. विद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

(2) यह पद्धति ज्ञानात्मक पाठ के लिए बहुत ही उपयोगी है।

(3) इसमे शिक्षक एवं छात्र दोनो की सक्रिया रहते है।

(4) इसके द्वारा शिक्षण मे समय की बचत होती है।

(5) इसके द्वारा ज्ञान शीघ्रता से दिया जा सकता है।

दोष —

(1) इस पद्धति के विरुद्ध यह आरोप लगाया जाता है कि यह छात्रों को निष्क्रिय श्रोता बनाती है।

(2) इस पद्धति में अध्यापक का एकाधिकार होता है जिसके कारण शिक्षण की सजीवता एवं रोचकता नष्ट हो जाती है।

(3) इसके द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान स्थायी एवं वास्तविक नहीं होता।

सीमाएँ —

(1) इस पद्धति द्वारा शिक्षण को संजीव बनाने वाले उपकरण शिक्षक को उपलब्ध नहीं हो पाते।

(2) इसके द्वारा बालक की कौतूहल प्रवृत्ति की सन्तुष्टि नहीं हो पाती।

(3) यह विधि रुचि के सिद्धान्त पर आधारित नहीं है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

सुझाव →

(1) माध्यमिक स्तर पर इसका ~~प्रयोग~~ उपयोग कम ही करना चाहिए।

(2) शिक्षकों को व्याख्यान देते समय छात्रों के अवधान विस्तार का ध्यान रखना चाहिए।

(3) इस पद्धति का प्रयोग केवल नवीन पाठ की भूमिका के लिए ही किया जाये तो लाभप्रद होगा।

(4) व्याख्या क्रमबद्ध होनी चाहिए।

(5) व्याख्यान की भाषा तथा बोली छात्रों के मानसिक स्तर के अनुसार होनी चाहिए।

योजना पद्धति → इस पद्धति का जन्म-दाता श्री डब्ल्यू. एच. किलपैट्रिक (~~W~~ W. H. Kilpatrick) है। डीवी के प्रयोजनवाद के सिद्धान्तों के आधार पर इस पद्धति का निर्माण किया गया। इसका निर्माण विद्यालय के परम्परागत एवं शुष्क वातावरण को दूर करने के लिए किया गया है। इसमें छात्रों की क्रियाशीलता को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसमें शिक्षक परिस्थितियों के निर्माणकर्त्ता तथा मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।

प्रोजेक्ट का अर्थ — 'प्रोजेक्ट' शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए नीचे कुछ परिभाषाएँ दी जा रही है —

आचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

" प्रोजेक्ट वह सहृदयपूर्ण अभिप्राययुक्त क्रिया है, जो पूर्ण संलग्नता के साथ सामाजिक वातावरण में पूर्ण की जाती है।"
— किलपैट्रिक

" प्रोजेक्ट एक समस्यामूलक कार्य है, जिसका समाधान उसके प्राकृत वातावरण में

ही किया जाता है।" — स्टीवेन्सन

"प्रोजेक्ट वास्तविक जीवन का एक छोटा-सा टुकड़ा है, जिसको विद्यालय में प्रतिपादित किया जाता है।" — बेलार्ड

उपर्युक्त परिभाषाओं से, प्रोजेक्ट के निम्नलिखित गुण स्पष्ट होते हैं —

(1) प्रोजेक्ट का एक स्पष्ट उद्देश्य होता है जिसकी प्राप्ति के लिए उसको पूर्ण किया जाता है।

(2) प्रोजेक्ट में क्रियाशीलता निहित रहती है।

(3) प्रोजेक्ट का शैक्षिक महत्व होता है।

गुण —

शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

(1) बालकों में इस पद्धति द्वारा सतत प्रयत्नशीलता तथा रचनात्मक सक्रियता का विकास होता है।

(2) इस पद्धति में स्व-क्रिया पर बल दिया जाता है। छात्र इसके द्वारा स्वानुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं।

(3) इस पद्धति के प्रयोग से छात्रों में सामाजिक गुणों, आदतों तथा अभिरुचियों का विकास होता है।

(4) यह पद्धति सीखने के सिद्धान्तों पर आधारित है। उदाहरणार्थ अभ्यास तत्परता तथा परिणाम का नियम। इस कारण यह पद्धति मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुकूल है।

दोष एवं सीमाएँ —

① इस पद्धति द्वारा शिक्षण करने मे समय बहुत लगता है। अर्थशास्त्र को इतना समय, समय-तालिका मे प्राप्त नही होता है।

② अर्थशास्त्र की प्रचलित पुस्तके योजनाओ के आधार पर नही ~~लिखि~~ लिखी गयी है। इस कारण योजनाओ की ~~पूर्ति~~ पूर्ति के लिए सामग्री उपलब्ध नही हो पाती। इसलिए भी योजना पद्धति को नही अपनाया जाता।

विचार-विमर्श पद्धति → आधुनिक शैक्षिक विचार-धारा के अनुसार, बालक को ~~निष्~~ ~~व~~ निष्क्रिय श्रोता नही माना जाता है वरन उसको सिखने की प्रक्रिया मे सक्रिय बनाये रखने पर बल दिया जाता है बालक जिस ज्ञान को क्रिया करके प्राप्त करता है वह स्थायी रहता है। बालक को सक्रिय बनाये रखने के लिए विभिन्न क्रियात्मक शिक्षण विधियो का प्रयोग किया जाता है। उनमे से एक विचार-विमर्श या वाद-विवाद विधि है। इस पद्धति के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए निचे कुछ परिभाषाए दी जा रही है।

प्राचार्य
मीरा ... महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण ...

(1) जेम्स . एम. ली → विचार - विमर्श एक शैक्षिक सामूहिक क्रिया है जिसमे शिक्षक तथा छात्र सहयोगी ढ़ंग से किसी समस्या या प्रकरण पर बात- चित करते है।

(2) रिस्क → विचार - विमर्श का अर्थ है अध्ययन की जाने वाली समस्या या प्रकरण मे निहित सम्बन्धो का विचार शिल विवेचन।

गुण →

(1) यह पद्धति छात्रो को सहयोगी रूप से कार्य करने का प्रशिक्षण प्रदान करती है।

(2) इसके प्रयोग से छात्र अपने भावो एवं विचारो को सुव्यवस्थित रूप मे अभिव्यक्त करना सिख जाते है।

(3) यह पद्धति छात्रो मे स्वतन्त्र अध्ययन करने की आदत का विकास करती है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

दोष →

(1) इसमे शर्मीले तथा ~~मन्द बुद्धि~~ मन्द बुद्धि बालक समुचित लाभ नही उठा पाते।

(2) इसका समुचित संचालन उच्च कक्षाओ मे ही सम्भव है।

सुझाव →

(1) समस्या का चैन सहयोगी रूप से किया जाए।

(2) सभी छात्रों को विचार विमर्श मे भाग लेने के लिए अवश्य अवसर प्रदान किये जाये।

(3) स्मृति की अपेक्षा तर्कों तथा निर्णयों पर बल दिया जाए।

(4) छात्रों को निष्कर्षों एवं स्वतन्त्र निर्णयों के निर्माण मे सहायता प्रदान की जाये।

09/09/2020

मीरा ... महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
...पुर, ताखा, बलिया